६. और प्रेमचंद जी चले गए

– डॉ. रामकुमार वर्मा

परिचय

जन्म : १९०५, सागर (म.प्र.)
मृत्यु : १९९०
परिचय : रामकुमार वर्मा जी आधुनिक हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि, एकांकीकार, नाटककार, लेखक और आलोचक हैं। आपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और साहित्यिक विषयों पर डेढ़ सौ से भी अधिक एकांकी लिखे हैं। आपने समीक्षक तथा हिंदी साहित्य के इतिहास लेखक के रूप में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
प्रमुख कृतियाँ : 'चित्ररेखा', 'जौहर', 'अभिशाप', 'वीर हमीर' (काव्य संग्रह), 'चार ऐतिहासिक एकांकी', 'रेशमी टाई', 'शिवाजी', (एकांकी) हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, 'साहित्य समालोचना' (आलोचना) 'एकलव्य', 'उत्तरायण', 'ओ अहिल्या' (नाटक) आदि।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत संस्मरण में डॉ. रामकुमार वर्मा जी ने प्रसिद्‌ध उपन्यासकार एवं कथाकार प्रेमचंद के व्यक्तित्व पर रोशनी डाली है। इस संस्मरण में प्रेमचंद जी की सरलता, सादगी भोलेपन के दर्शन होते हैं।

बचपन से ही रेलवे स्टेशन पर जाना मुझे अच्छा लगता है। बात सन १९३५ की है। मैं शाम के समय टहलने के लिए प्रयाग स्टेशन पर चला गया। तभी मैंने देखा कि तीसरे दर्जे के डिब्बे से एक सज्जन उतर रहे हैं और अपना बिस्तर स्वयं अपनी बगल में दबाए प्लेटफार्म पर आगे बढ़ रहे हैं। पास आने पर देखा कि वृद्‌ध सज्जन और कोई नहीं, हिंदी के प्रसिद्‌ध कहानी और उपन्यास लेखक प्रेमचंद जी हैं। मैं आगे बढ़कर बोल उठा; ''बाबू जी ! आप ?'' उन्होंने जोर से ठहाका लगाया और कहा, ''हाँ, मैं।'' उनके अट्‌टहास से सारा स्टेशन गूँज उठा। मैंने पूछा– ''कहाँ जाइएगा ?'' उत्तर दिया–''जहाँ तुम कहो।'' मैंने कहा–''मेरे घर चलिए।'' उन्होंने उत्तर दिया–''चलो'' और बिना किसी तकल्लुफ के वे मेरे साथ पैदल मेरे घर चले आए। इतने बड़े साहित्यकार, वे इतने सरल और सौम्य हैं कि अपने जीवन की सुविधा के लिए कोई भी उपकरण जुटाना नहीं चाहते। उनका अट्‌टहास इतना आकाशव्यापी है कि वातावरण का सारा विषाद उसमें धुल जाता है।

वे हिंदुस्तानी एकेडेमी के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने के लिए प्रयाग आए हुए थे। ग्यारह बजे दिन से तीन बजे तक वे उसमें सम्मिलित होते थे किंतु प्रातःकाल से ही उनसे भेंट करने वालों का क्रम आरंभ हो जाता था जो ग्यारह बजे रात तक चलता रहता था। जब वे बोलने के लिए खड़े होते तो पहले वे एक कहकहा लगाते जिससे श्रोतागण उन्हें सुनने के लिए और भी उत्सुक हो उठते थे। फिर कहते–''आपसे कहूँ भी तो क्या कहूँ और कहूँ तो यह कहूँ कि आप आँखों से काम लीजिए, कानों से नहीं। आप मुझे देखिए और पढ़िए–सुनिए मत। सुनना गलत है, देखना सही है। मेरी जिंदगी तो सपाट मैदान है। उसमें कितने खंदक हैं, गड्‌ढे हैं, कितने काँटे, कितनी झाड़ियाँ हैं, आप सोच भी नहीं सकते। लेकिन उसी पर चलकर आप लोगों के पास आया हूँ। पिता ने मेरा नाम धनपत राय रखा लेकिन धन से कभी वास्ता नहीं रहा। पढ़ते समय एक वकील साहब के लड़कों को पढ़ाता था, पाँच रुपये मासिक मिल जाता था। दो–रुपयों में अपना गुजारा करता था, तीन रुपये घर भेज देता था। उसी समय मैंने 'तिलिस्म होशरुबा' और 'फिसाना आजाद' पढ़ा था। कुछ होश आया तो उर्दू में लिखना शुरू किया फिर आप लोगों ने हिंदी में बुला लिया।''

जब तक प्रेमचंद जी मेरे घर रहे, मुझे मुश्किल से घंटे–आध–घंटे

का समय मिलता, जब मैं उनके साथ चाय पीता था अन्यथा उनका समय अन्य व्यक्ति अधिकतर उनकी अनिच्छा से अपने अधिकार में कर लेते। एक दिन मैं अपनी कविताओं का क्रम व्यवस्थित कर उनकी प्रेस कॉपी तैयार कर रहा था। वे आए। पूछा-''क्या कर रहे हो ?'' मैंने कहा-मैं अपनी कविताओं का संग्रह प्रकाशित कराने के लिए ठीक कर रहा हूँ। उन्होंने कहा-''छपने के लिए कहाँ भेज रहे हो ?'' मैंने कहा-''साहित्य भवन, प्रयाग ही इसे प्रकाशित करने का आग्रह कर रहा है।'' उन्होंने कहा-''गलत। इसे मैं प्रकाशित करूँगा।'' ऐसा कहकर उन्होंने मेरा काव्य संग्रह अपने बैग में रख लिया।

वह संग्रह 'रूपराशि' के नाम से उनके सरस्वती प्रेस बनारस से प्रकाशित हुआ। जिस दिन वे जाने वाले थे, उस दिन मेरी पत्नी ने उनके लिए खीर तैयार की। किंतु रात ग्यारह बजे तक प्रतीक्षा करने पर भी उनके दर्शन नहीं हुए। लाचार होकर पत्नी ने उनके कमरे में भोजन की थाली रख दी और उसमें खीर का कटोरा भी सँभालकर रख दिया। सोचा-'जब प्रेमचंद जी आएँगे, भोजन करेंगे।' सुबह उठकर देखा कि प्रेमचंद जी अपना सामान लेकर चले गए हैं। टेबल पर एक परचा लिखकर छोड़ दिया है। वह परचा इस प्रकार था:-

'प्यारे रामकुमार !

निहायत अफसोस है कि मैं दिन भर से गायब रहा। मेरे वक्त पर न आने से तुम्हें और बहूरानी को बेहद तकलीफ हुई होगी। लाचार था। रात दो बजे लौटकर आया, तुम लोग सो गए थे। जगाना ठीक नहीं समझा। देखा, कमरे में बहूरानी ने खाने की थाली परोसकर रख दी है। बढ़िया खीर भी थी लेकिन इलाहाबाद की गरमी में सुबह की बनी हुई खीर का दूध फट गया था। एक जगह खाना खा चुका था लेकिन खीर तो मैंने खा ही ली। इस डर से कि फटे हुए दूध की खीर छोड़ देने से कहीं बहूरानी का दिल मेरी ओर से फट न जाए। खैर, उनको बहुत-बहुत आशीर्वाद। वे खुश रहें। फौरन जा रहा हूँ। चार बजे की गाड़ी पकड़नी है। भई, बुरा मत मानना। बगैर मिले जा रहा हूँ।

तुम्हारा,

धनपत राय

और इस तरह विश्वविख्यात कहानीकार और उपन्यासकार प्रेमचंद जी उस रात मेरे घर से चले गए।

मौलिक सृजन

अपने अनुभव किए हुए आतिथ्य के बारे में लिखो।

श्रवणीय

महात्मा गांधीजी का कोई संस्मरण सुनो और अपने मित्रों को सुनाओ।

संभाषणीय

'सुदर्शन' लिखित 'हार की जीत' कहानी पर वार्तालाप करो।

लेखनीय

नदी और तालाब के बीच का संवाद सृजनात्मक ढंग से लिखो।

पठनीय

प्रेमचंद जी लिखित 'बड़े भाई साहब' कहानी पढ़ो, उस कहानी का केंद्रीय विचार बताओ।

शब्द वाटिका

तकल्लुफ = शिष्टाचार, औपचारिकता
अट्टहास = जोर की हँसी, ठहाका
प्रतीक्षा = इंतजार
निहायत = बहुत

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

प्रेमचंद जी की विशेषताएँ
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

(२) कारण लिखो :

१. प्रेमचंद जी प्रयाग आए थे -------
२. लेखक कविताओं की प्रेस कॉपी बना रहे थे -------
३. प्रेमचंद जी ने लेखक की पत्नी द्वारा परोसी खीर खाई थी -------

(३) एक वाक्य में उत्तर लिखो :

१. सुबह उठकर लेखक ने क्या देखा ?
२. लेखक का काव्य संग्रह किस नाम से प्रकाशित हुआ ?

भाषा बिंदु पाठ के किन्हीं दस वाक्यों के उद्देश्य और विधेय अलग करके लिखो ।

उपयोजित लेखन **मुद्दों के आधार पर कहानी लिखो :**

एक जंगल में विशाल घना वृक्ष → उसपर पक्षियों के घोंसले → विषैले बाण, पेड़ के तने में घुसने से पेड़ का सूख जाना → सारे पक्षियों का इधर-उधर उड़ जाना → एक तोते का उसी पेड़ पर बैठे रहना → दूसरे तोते का उड़ चलने का आग्रह करना → इनकार → कहना 'मेरी दो पीढ़ियों का इसी पेड़ पर निवास' → 'इसे छोड़कर जाना असंभव' → शीर्षक

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन यातायात के नियमों, सांकेतिक चिह्नों एवं हेल्मेट की आवश्यकता आदि के चार्ट बनाकर विद्यालय की दीवार सुशोभित करो ।

I4HVN3